अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण परिणाम एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं को स्वीकृत तथा अस्वीकृत हेतु प्रदत्तों का समूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता हैं जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप में होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्ति द्वारा किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में सर्वे से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण ग्राफीय निरूपण के माध्यम से करने का प्रयास किया है। इस शोध अध्याय से कुल तीन परिकल्पनायें रखी गई हैं, जिसकी जांच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतिकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई है तथा परिकल्पनाओं की जांच की गई है।

परिकल्पना को ध्यान में रखते हुये आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। आंकडो का विश्लेषण उसका ग्राफीय प्रस्तुतिकरण करके किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में 5 प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री की संख्या की जानकारी प्राप्त कर प्रत्येक विद्यालय के शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को ग्राफ की सहायता से दर्शाया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का एक के बाद एक विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है।

4.1 परिकल्पनाओं का विश्लेषण

4.1.1 परिकल्पना प्रथम H_{o1}

शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री मे पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री का ग्राफीय प्रदर्शन

ग्राफ - 1

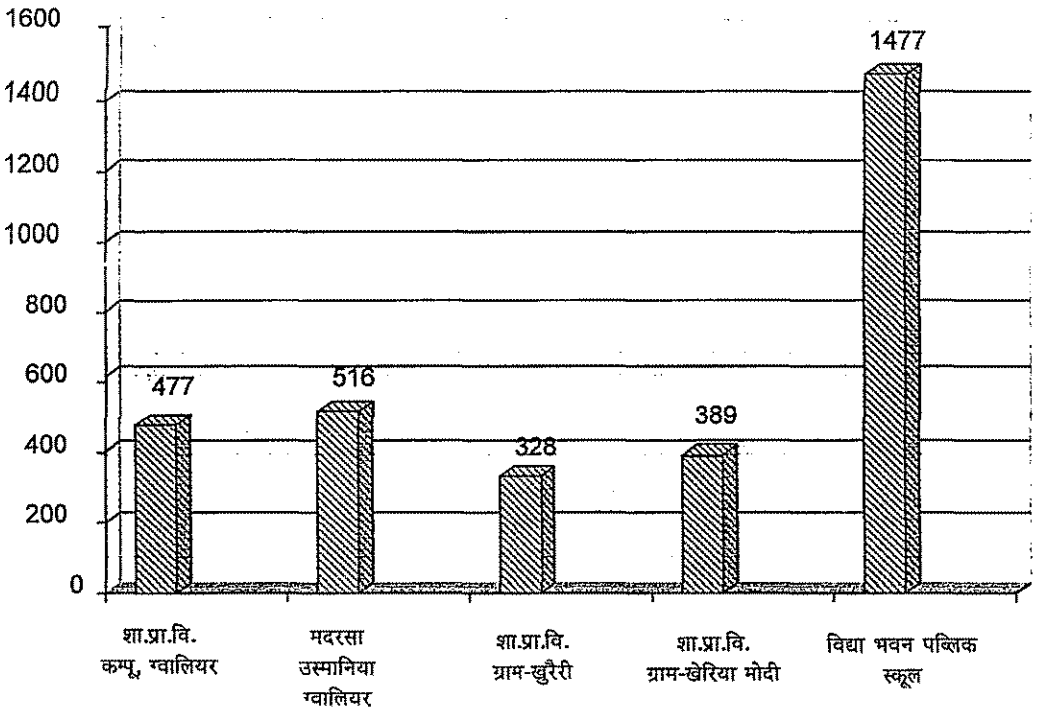

ग्राफ - 2

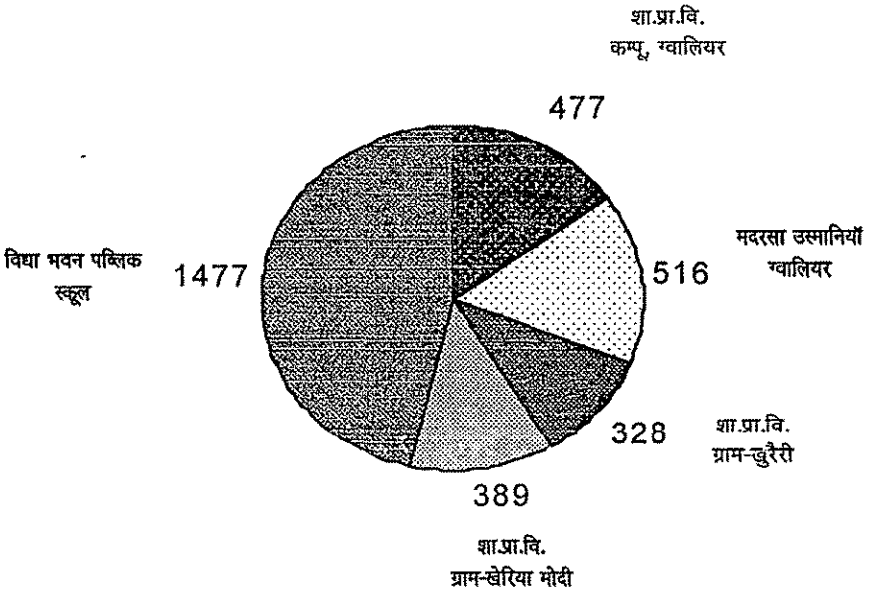

ग्राफ - 3

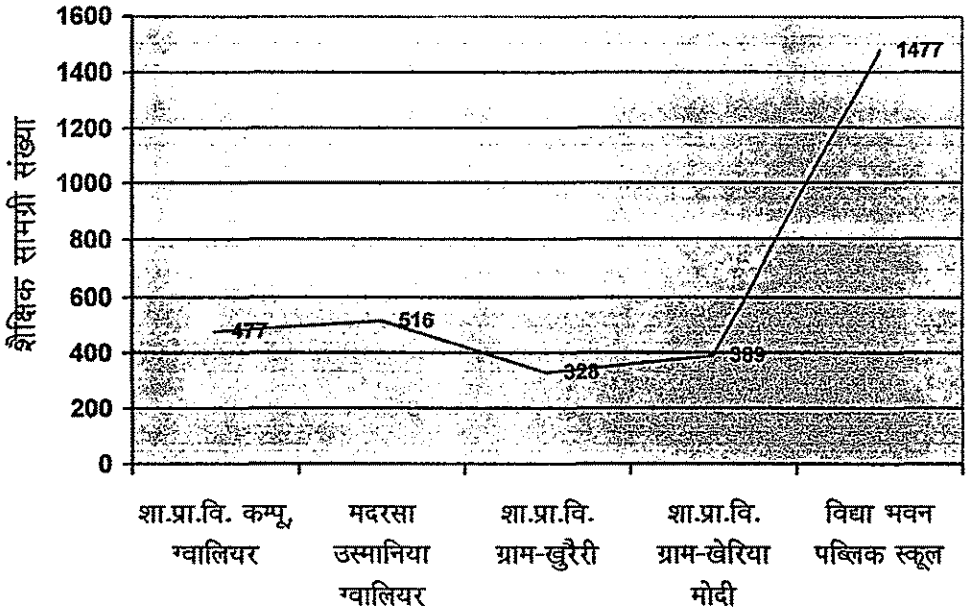

व्याख्या :-

उपरोक्त ग्राफों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री में अंतर है। शहरी क्षेत्र के शासकीय प्राथमिक विद्यालय कम्पू के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता 477 है। जबकि शहरी क्षेत्र के मदरसा उस्मानिया के विद्यार्थियों के पास यह उपलब्धता 516 है अर्थात शहरी क्षेत्र के दोनों विद्यालयों में शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता में मामूली अंतर है परंतु यह उपलब्धता शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम खुरैरी के पास अत्यंत कम 328 एवं शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम खेरिया मोदी के पास 389 यह दोनों ही उपलब्धता शहरी विद्यालयों की तुलना में काफी कम है तथा शहरी क्षेत्र के विद्या भवन पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के पास यह 1477 उपलब्धता है जो कि बहुत अधिक है। अतः सर्वप्रथम हमें शहरी एवं ग्रामीण शासकीय प्राथमिक विद्यालयों मे शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को बढ़ना है क्योंकि यह बहुत कम है तथा इसका वितरण समान करना ही हमारी प्रथम प्राथमिकता है। पब्लिक स्कूल प्रस्तुत अध्ययन के लिये आधार के रूप में लिया है जिसमें हमें शैक्षिक सामग्री की विद्यार्थियों के लिये संख्यात्मक एवं गुणात्मक उपलब्धता के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है।

4.1.2 परिकल्पना द्वितीय H_{o2}

शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री में कक्षानुसार पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

ग्राफ - 4

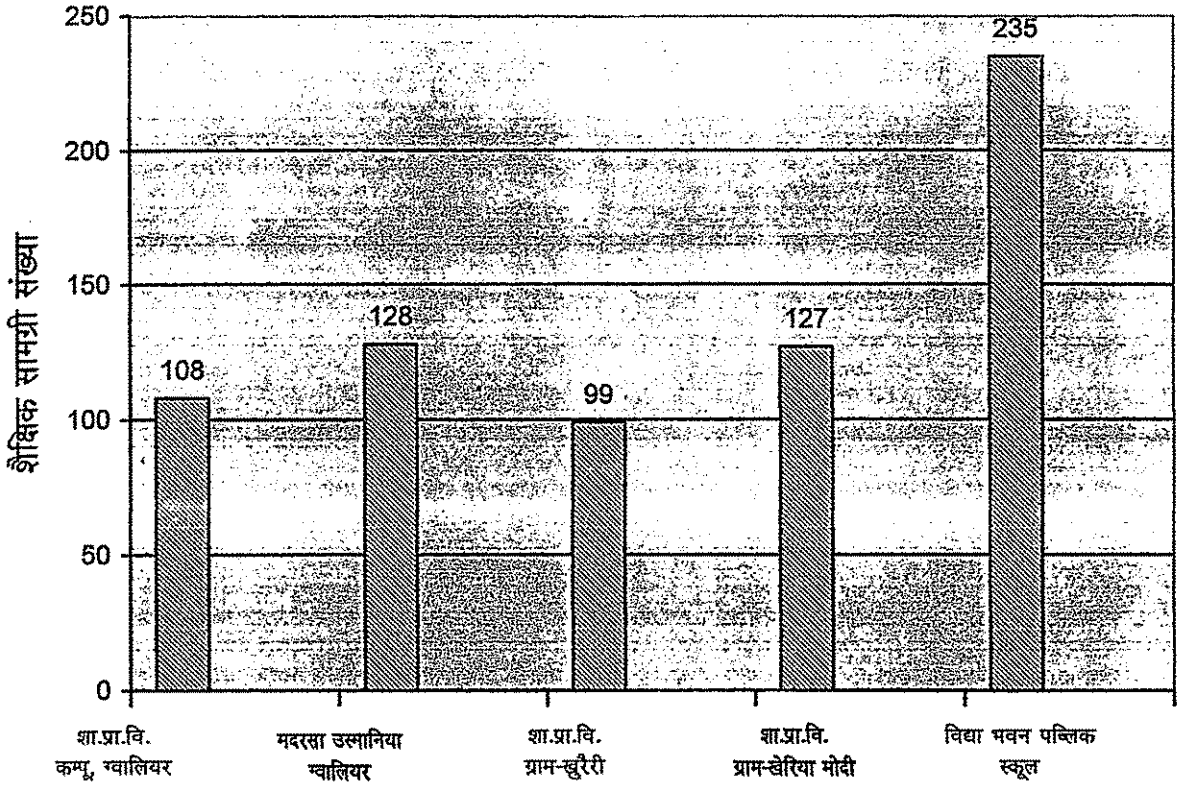

कक्षा-1

प्रस्तुत ग्राफ में अध्ययन में लिये गये पांचों विद्यालयों के कक्षा 1 के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को दर्शाया गया है। ग्राफ से स्पष्ट है कि सबसे कम शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम खुरैरी के विद्यार्थियों के पास है जो कि काफी कम है। ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि मदरसा उस्मानियाँ के विद्यार्थियों के शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता 128 है जो शासकीय विद्यालयों में सबसे अधिक है परन्तु ग्रफ से यह भी स्पष्ट है कि शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम- खेरिया मोदी के विद्यार्थियों के पास यह उपलब्धता 127 है जो मदरसा उस्मानियाँ के बराबर ही है, शहरी शासकीय प्राथमिक विद्यालय कम्पू के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री 108 की तुलना में अधिक भी है अतः प्रस्तुत ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि शहरी

शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में भी कक्षानुसार शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता है तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में भी कक्षानुसार अर्थात कक्षा 1 में पढ़ रहे विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की कमी नहीं होना चाहिये।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार के हेतु लिये गये विद्या भवन पब्लिक स्कूल के कक्षा 1 के विद्यार्थियों के पास यह उपलब्धता सभी सरकारी विद्यालयों से अधिक 235 है अतः शहरी एवं ग्रामीण शासकीय प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 में शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को पब्लिक स्कूल के कक्षा 1 विद्यार्थियों तक लाने के प्रयास करने चाहिये ताकि प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थी किसी भी कौशल को सीखने से वंचित न रह जाये तथा शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को सभी प्रकार के विद्यालयों एवं कक्षाओं में समान बनाना चाहिये। प्रस्तुत ग्राफ के सभी स्तम्भों को समान ऊँचाई का बनाने का प्रयास करना चाहिये।

ग्राफ - 5

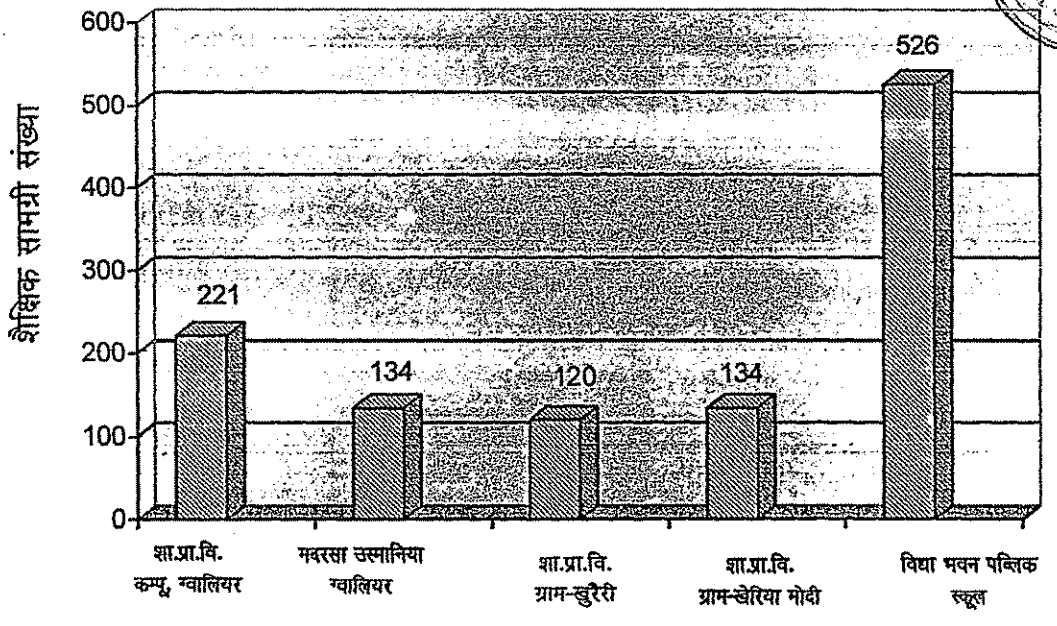

कक्षा -2

ग्राफ से स्पष्ट है कि शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-2 में शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता सर्वाधिक शासकीय प्राथमिक विद्यालय कम्पू के पास है जो कि 221 है उसके बाद मदरसा उस्मानिया एवं शासकीय प्राथमिक विद्यालय खेरिया मोदी में समान उपलब्धता 134 है

जबकि शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम खुरैरी में सबसे कम 120 है। यह स्पष्ट है शासकीय प्राथमिक विद्यालय कम्पू की कक्षा 2 की कक्षाध्यापिका शैक्षिक सामग्री के महत्व को समझती है जिस कारण यह सुधार देखने में मिला क्योंकि इस विद्यालय में कक्षा-1 में यह उपलब्धता अन्य विद्यालयों की तुलना में कम थी। अन्य शासकीय विद्यालयों की कक्षा-2 के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को बढ़ाकर समान करना होगा साथ ही ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि विद्या भवन पब्लिक स्कूल के कक्षा-2 के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता 526 है, जो कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-2 के विद्यार्थियों से काफी अधिक है। प्राथमिक स्तर पर छात्र के अधिगम के लिये प्रत्येक कक्षा का महत्व होता है अतः कक्षा-2 के सभी सरकारी विद्यार्थियों से काफी अधिक है। प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-2 के विद्यार्थियों से काफी अधिक है। प्राथमिक स्तर पर छात्र के अधिगम के लिये प्रत्येक कक्षा का महत्व होता है अतः कक्षा-2 के सभी सरकारी विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता के स्तर को पब्लिक स्कूल के कक्षा-2 के विद्यार्थियों के समान बनाना चाहिये तथा यह समानता शहरी एवं ग्रामीण दोनों शासकीय प्राथमिक शालाओं में होना चाहिये।

ग्राफ - 6

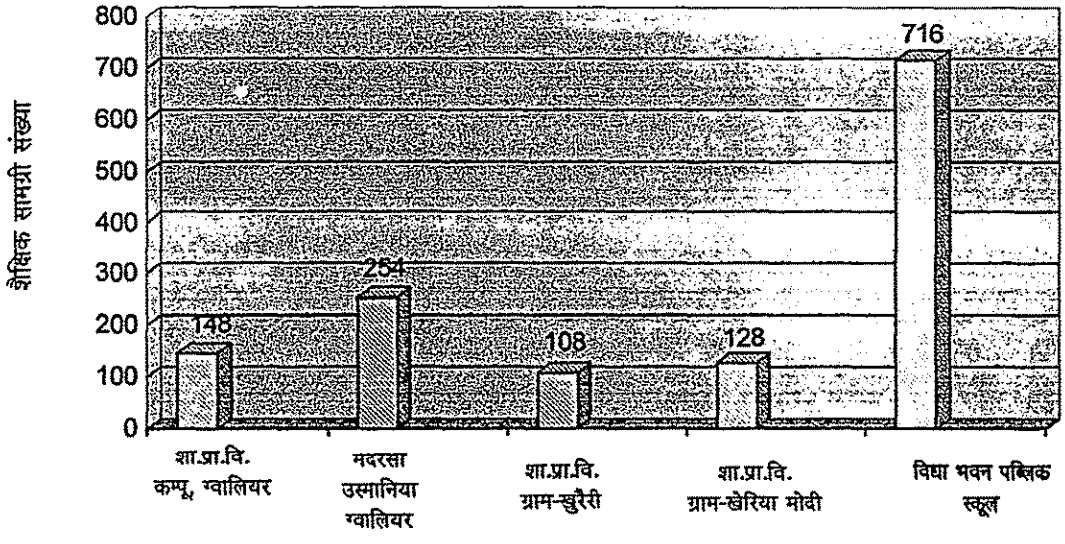

कक्षा - 3

प्रस्तुत ग्राफ में शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के कक्षा-3 के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता को प्रदर्शित किया गया हैं। ग्राफ से स्पष्ट है कि मदरसा उस्मानिया में यह उपलब्धता सभी शासकीय विद्यालयों की तुलना में सर्वाधिक 254 है। इसके बाद शासकीय प्राथमिक विद्यालय कम्पू में 148, शासकीय प्राथमिक विद्यालय खेरिया मोदी में 128 एवं शासकीय

प्राथमिक विद्यालय खुरैरी में सबसे कम 108 है। स्पष्ट है कि यह उपलब्धता सभी विद्यालयों में एक समान बनानी होगी मदरसा उस्मानियों में यह उपलब्धता 254 शासकीय विद्यालयों में सबसे अधिक है परंतु विद्या भवन पब्लिक स्कूल के कक्षा- 3 के विद्यार्थियों के पास कही अधिक लगभग तीन गुना अर्थात 716 है। इस बड़े अन्तर को कम करना चाहिये। अतः सरकार को कक्षा स्तर पर शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता पर ध्यान देना चाहिए तथा सभी विद्यालयों में चाहे शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र किसी भी क्षेत्र के हो, समान रूप से उपलब्ध कराना चाहिए।

4.1.3 परिकल्पना तृतीय Ho_3

पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में बहुत अधिक है।

प्रस्तुत अध्ययन में 4 सरकारी प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 1, 2 एवं 3 के प्रति विद्यालय 60 विद्यार्थी लिये गये हैं। जिनके पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता

= 477+328+389+516 = 1710

अतः प्रति विद्यार्थी (सरकारी विद्यालय के) औसत शैक्षिक सामग्री

$$=\frac{1710}{240}=7.1$$

प्रति विद्यार्थी (पब्लिक स्कूल) औसत शैक्षिक सामग्री

$$=\frac{1477}{60}=24.1$$

उपरोक्त गणना से स्पष्ट है कि शासकीय प्राथमिक विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी के पास लगभग 7.1 शैक्षिक सामग्री उपलब्ध रहती है, जिसे लेकर वह विद्यालय में आता है, जबकि पब्लिक स्कूल का प्रत्येक विद्यार्थी अपने पास औसत 24.1 शैक्षिक सामग्री रखता है जिसे लेकर वह विद्यालय में आता है अर्थात सरकारी एवं पब्लिक स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थियों के पास अधिगम के माध्यम में बहुत अधिक अन्तर दिखाई देता है। प्रस्तुत गणना को ग्राफीय रूप में नीचे दर्शाया गया है:

ग्राफ - 7

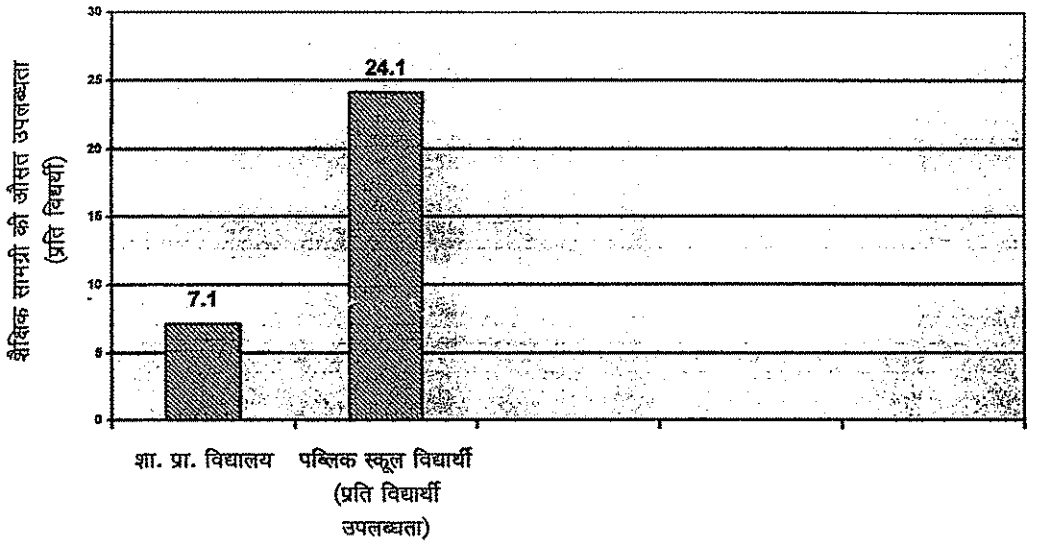

ग्राफ - 8

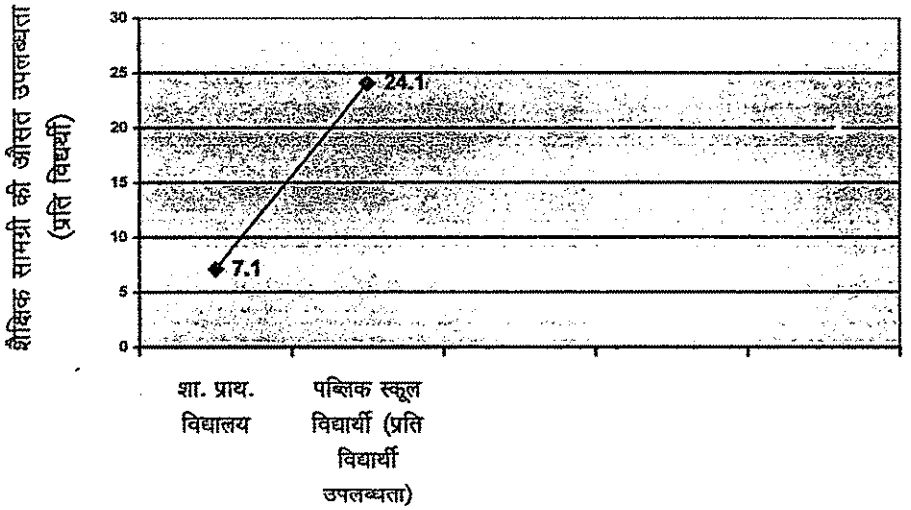

ग्राफ हमें शासकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों एवं पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता में एक बड़े अंतर को दर्शाता है। हमारी गणना से स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के तीन विद्यार्थी जितनी शैक्षिक सामग्री लेकर अध्ययन हेतु विद्यालय आते है उतनी शैक्षिक सामग्री पब्लिक स्कूल का एक विद्यार्थी लेकर अध्ययन हेतु स्कूल आता है।

3 शासकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री

= 1 पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री

यह अंतर बहुत अधिक है तथा यह आज की स्थिति है जब सरकारी स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास पर पर्याप्त धन व्यय किया जा रहा है। पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता का अधिक पाया जाना आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि उनके पास आर्थिक सम्पन्नता, अच्छी सुविधायें एवं वातावरण अध्ययन के लिये मौजूद है परंतु सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री इतनी कम मात्रा में उपलब्ध होना आश्चर्यजनक है। स्वतंत्रता के बाद से ही शिक्षा के विकास हेतु आयोगों का गठन हुआ है तथा विभिन्न योजनायें बनायी गयी है तथा कुछ योजनायें वर्तमान समय में भी चल रही हैं। सभी योजनाओं में छात्रों विद्यालय प्रवेश लेने हेतु आकर्षित करने के लिये अच्छी भौतिक सुविधाओं के विकास प्रागंण, ब्लैक बोर्ड आदि की व्यवस्था की गयी परंतु विद्यालय आने के बाद वह अधिगम किस प्रकार करे कि उसकी रूचि भी अध्ययन में बनी रहे तथा विभिन्न कौशलों को सीख सके इस पर ध्यान नहीं दिया गया। जिसका सबसे सशक्त माध्यम शैक्षिक सामग्री है।

प्रस्तुत गणना में हमने देखा कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी के पास, पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी की तुलना में 1/3 शैक्षिक सामग्री ही उपलब्ध है अर्थात पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों को विभिन्न कौशलों की सीखने के अवसर, सरकारी विद्यार्थियों की तुलना में 3 अधिक मिलेंगे तथा वे अधिक कौशलों को सीख सकेंगे एवं उनके अभ्यास हेतु अधिक अवसर उपलब्ध होंगे।

यह स्पष्ट है कि हम यह उपलब्धता पब्लिक स्कूल के समान नहीं कर सकते परंतु उस अंतर को कम अवश्य कर सकते है ताकि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी को भी किसी कौशल (लेखन, पठन, चित्रण) के सीखने से वंचित ना रहना पड़े। यदि यह अंतर बना रहा तो सरकारी विद्यार्थी हर क्षेत्र में पीछे रह जायेगें विशेषकर अध्ययन क्षेत्र में तथा कौशलों को सीखने संबंधी कमी उन्हें माध्यमिक स्तर, उच्चस्तर एवं आगे सभी अध्ययनों के समय बनी रहेगी अतः यह आवश्यक है विद्यार्थी के अधिगम के लिये हमें माध्यम (शैक्षिक सामग्री) सभी शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में समानता के साथ उपलब्ध कराना है तथा उसका प्रयोग कर अपने अधिगम को किस प्रकार सहायक बनाये यह विद्यार्थी की क्षमता पर निर्भर रहने दें।

समान माध्यम एवं वातावरण मिलने से सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी भी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों से शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने में समर्थ हो सकेंगे।